जीवन विज्ञान इन्टरनेशनल शिविर के संभागियों ने कहा

प्रत्येक विद्यालय में चलना चाहिए जीवन विज्ञान

सरदारशहर 12 नवम्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में एवं मुनि किशनलाल के निर्देशन में चल रहे जीवन विज्ञान इन्टरनेशनल शिविर में भाग लेने पहुंचे देश के विविध विद्यालयों के विद्यार्थियों का एक ही मत था कि देश की प्रत्येक स्कूल में जीवन विज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए। दिल्ली की सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी गुरप्रित सिंह ने कहा कि जब जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है तो इसे स्कूलों में क्यों लागू नहीं किया जाता है। जबसे मैं जीवन विज्ञान के प्रयोग करने लगा हूं मुझे अपने आप में सकारात्मक बदलाव नजर आते हैं। मेरी स्मरणशक्ति बढी है और स्वयं पर नियंत्रण कर सकता हूं। अब इस शिविर में आने के बाद और ज्यादा जीवन चर्या व्यवस्थित हो गई है। हैदराबाद की दिक्षाय स्कूल से प्रतिनिधित्व कर रहे सैयद अकरम का कहना था कि जीवन विज्ञान हमें सभी धर्मों में समानता सिखाता है। मैं इससे पीछले तीन सालों से जुड़ा हुआ हूं। इसके प्रयोग मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। इन प्रयोगों के कारण मैंने अपने गुस्से पर नियंत्रण करना सीख लिया है। जीवन विज्ञान को हर जाति और संप्रदाय के लोगों को अपनाना चाहिए। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल जयपुर के विद्यार्थी आयुष खतरिया ने बताया कि मेरी स्कूल में जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये जाते हैं जिनकी वहज से मेरी अनेक गलत आदतों में परिष्कार हुआ। मैं नहीं चाहता इस स्कूल को छोड़कर कक्षा 8 से आगे इसमें पढ़ाई न होने के कारण अगले वर्ष छोड़नी पड़ेगी, जिसका मुझे दु:ख है। इस इन्टरनेशनल शिविर में जीवन विज्ञान की गहनतम जानकारी लेने के लिए आया हूं। मुनि किशनलाल एवं अमित सेठिया का प्रशिक्षण बहुत अच्छा लगा। जो सोचकर आया था उससे ज्यादा मिला।

सेंट महाप्रज्ञ स्कूल जगराओं (पंजाब) की छात्रा मेधा जैन ने बताया कि जीवन विज्ञान हमें कलात्मक जीवन जीना सीखाता है। इस शिविर से मुझे अनुशासन पूर्वक जीवनचर्या अपनाने का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है। एम.बी.ए. कर चुके अरूण छाजेड़ ने बताया कि जीवन विज्ञान के प्रयोगों को करने के बाद मुझे जीवन के लक्ष्य का भान हुआ। पहले बिना लक्ष्य के मैं जी रहा था। अब मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ गया है और निर्णय शक्ति का भी विकास हुआ है। दिल्ली के आतिर आलम ने बताया कि जीवन विज्ञान प्रत्येक विद्यार्थी के लिए जरूरी है, इसको जन-जन तक पहुंचाने के लिए मैं प्रयास करूंगा और इस ओर प्रत्येक विद्यालय मैनेजमेंट को भी ध्यान देना चाहिए।

जीवन विज्ञान इन्टरनेशनल शिविर के संभागियों के विचारों को जानने के बाद ऐसा लगता है कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत जीवन विज्ञान शिक्षा जगत के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है। शिविर के संभागियों द्वारा

मनोयोग के साथ किये जाने वाले प्रयोगों एवं आसनों को देखकर जीवन विज्ञान के प्रति उनकी दिवानगी को जान सकते हैं। छोटे-छोटे इन विद्यार्थियों द्वारा सर्वांगीण विकास करने वाले जीवन विज्ञान को महत्व दिया जाना शिक्षा जगत के लिए चिंतनीय है। बालकों का मानना है कि वर्तमान में शिक्षा का बोझ सर पर रहता है पर इस बोझ को कैसे सहजता से झेलें इसका प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। जीवन विज्ञान ने न केवल हमारी क्षमताओं को बढ़ाया है बल्कि विपरित परिस्थितियों में भी जीना सिखाया है। शिविरार्थियों ने ऐसे शिविरों का आयोजन प्रत्येक शहर में किये जाने की मांग की।

मनुष्य का परम बंधु विश्वास है : आचार्य महाश्रमण

गुरुवार को तेरापंथ भवन में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने अपने दैनिक प्रवचन में कहा कि शरीर में जब तक व्याधियां, रोग, बुढ़ापा उत्पन्न न हो जाए तब तक धर्म का आचरण करते रहना चाहिए।

उन्होंने कहा कि संतोष ही परम सुख है साधु के पास कुछ नहीं होता है उसने सबकुछ त्याग दिया इसलिए उसे तीन लोक का नाथ कहा गया है क्योंकि उन्होंने संतोष धारण कर लिया संतोषी बन गये।

उन्होने विश्वास मनुष्य का परम बंधु बताते हुए कहा कि मनुष्य का परम बंधु विश्वास होता है जो व्यक्ति प्रामाणिकता से व्यापार करता है उसकी ज़्याति होती है।

इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार के दीक्षा पर्याय के 36 वर्ष पूर्ण कर 37वें वर्ष में प्रवेश पर आचार्य महाश्रमण ने कहा कि मुनि मोहजीतकुमार कौशलता के साथ मंच का संचालन करने वाले संत हैं। ये आध्यात्मिक विकास करते रहें ऐसी उनके प्रति मंगल कामना की।

गुजरात राज्य के वाव क्षेत्र से उपस्थित वाव जैन श्वेताज़्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हंसमुखभाई का मोमेंटो द्वारा चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने सज़्मान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

जैन विद्या परीक्षाएं 13, 14 नवज़्बर को

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित होने वाली परीक्षाएं 13, 14 नवज़्बर को दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक आयोजित होगी। उक्त जानकारी देते हुए मुनि जयंतकुमार ने बताया कि देश के 233 परीक्षा केन्द्रों पर 10 हजार के लगभग परिक्षार्थियों के आवेदन प्राप्त हुए हैं। जैन विद्या के भाग 1 से 9 तक की परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थीं को संस्कार, निर्माण की विशेष शिक्षा मिलती है।

जीवन विज्ञान शिक्षार्थी प्रशिक्षण शिविर

सरदारशहर 12 नवज़्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में एवं प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल के मार्गदर्शन में तेरापंथ भवन के प्रेक्षा प्रशाल में विद्यार्थियों में संस्कार निर्माण के उद्देश्य से जीवन विज्ञान शिक्षार्थी प्रशिक्षण का आयोजन मुज़्य अतिथि उपखण्ड अधिकारी लोकेश सहल एवं कार्य अध्यक्ष उदयचन्द दुगड़ 'दी ग्रेट' की अध्यक्षता में किया गया।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने जीवन विज्ञान के महत्व को समझाते हुए कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोग के माध्यम से विद्यार्थी अपने जीवन में स्वस्थ, शांत एवं आनन्द का आभास कर सकते हैं। जीवन विज्ञान मधुर बोलना, सकारात्मक सोच, सही बैठना, सही चलना सीखाता है।

मुज़्य उपखण्ड अधिकारी लोकेश सहन ने विद्यार्थियों को सज़्बोधित करते हुए कहा कि जीवन विज्ञान जीवन को स्वस्थ रखने का माध्यम है इसके द्वारा द्यिार्थियों में संयमित आचरण व स्मरण शक्ति का विकास होता है।

प्रशिक्षक हनुमान शर्मा ने नमस्कार मुद्राओं एवं आसनों का अज़्यास करवाया, जीवन विज्ञान अकादमी के संयोजक सज़्पतराम सुराणा ने प्रशनमंच प्रतियोगिता, संस्कार निर्माण प्रतियोगिता व निज़्बन्ध प्रतियोगिता के बारे में जानकारी दी। जीवन विज्ञान अकादमी के संगठनमंत्री सुशील निर्वाण वं सहमंत्री नरेश सोनी ने भी विचार व्यक्त किया।

इस अवसर पर बृजमोहन सर्राफ, डॉ. ए.एम. बेहलीम, डॉ. संजय दीक्षित आदि उपस्थित थे। कार्याध्यक्ष उदयचन्द दुगड़ 'दी ग्रेट' ने आगन्तुक विद्यार्थियों, अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सज़्पतराम सुराणा ने किया।

– शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)